ISSN-2582-6557 RNI-MP/BIL/2020/78687
JANMAT POWER NATIONAL RESEARCH JOURNAL
A MONTHLY RESEARCH JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY May-2023
NATIONAL PEER- REFEREED,REVIEW JOURNAL, INDEXING &IMPACT FACTOR-5.2

किशोर विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता (व्यक्तित्व और शैक्षिक उपलब्धि के अन्तर सम्बन्ध का अध्ययन)

मनोज कुमार शर्मा
शोधार्थी, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.)
एवं प्रवक्ता वीणा मैमोरियल कॉलेज ऑफ एजूकेशन, पदेवा करौली (राज.)
मनेन्द्र कुमार लहकोडिया
प्रवक्ता वीणा मैमोरियल कॉलेज ऑफ एजूकेशन, पदेवा करौली (राज.)
जगदीश प्रसाद शर्मा
शोधार्थी, शिक्षा संकाय राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.)
प्राचार्य, वीणा मैमोरियल कॉलेज ऑफ एजूकेशन, पदेवा करौली (राज.)

सारांश

शिक्षा का प्रारंभ प्रागैतिहासिक काल से ही माना जाता है। सर्वप्रथम मनुष्य ने वातावरण के अनुकुल ढलने एवं आचरण करने का प्रयत्न किया। मानव बुद्धि बल के आधार पर वातावरण से अनुकुलन करने में सफल होता हैं।यही से शिक्षा का विकास प्रारंभ हो जाता है। मनुष्य अपने आदि युग में पशु तुल्य जीवन जीता था। वह अपने रहने के लिए सुरक्षित स्थान (गृह) का निर्माण करता था, परन्तु उस गृह में रहने वाले व्यक्ति में आज जैसे- भावात्मक संबंध नही होते थे।

बच्चों का पालन पोषण प्रायः परिवारों में ही होता है। हमारे देश में बच्चों के पोषण का स्थान परिवार ही होते हैं। शिक्षा के नियमित जीवन व्यतीत करने का प्रशिक्षण देते हैं। जो स्वास्थ रक्षा के लिए आवश्यक हैं। बच्चे अपने परिवार के सदस्यों का अनुकरण कर समय से उठना, शारीरिक सफाई करना, घर की सफाई करना, समय पर भोजन करना, समय पर खेलना-कूदना, और समय पर नींद लेना इत्यादि सीखते हैं। इससे उनका शारीरिक विकास होता हैं। परिवर्तन प्रकृति का नियम हैं। जिसके संबंध में राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त ने अपने खण्ड काव्य 'पंचवटी' में कहा हैं कि परिवर्तन उन्नति हैं।

किशोरावस्था

किशोरावस्था मनुष्य के जीवन का बसंतकाल माना जाता है। यह काल बारह से उन्नीस वर्ष तक रहता है। परंतु किसी व्यक्ति में यह बाईस वर्ष तक चला जाता है। यह काल भी सभी प्रकार की मानसिक शक्तियों के विकास का समय है। भावों के विकास के साथ साथ बालक की कल्पना का विकास होता है। बालकों में सभी प्रकार के सौंदर्य की रुचि उत्पन्न होती है। बालक इसी समय नए नए और ऊँचे ऊँचे आदर्शों को अपनाता है। किशोर बालक इस अवधि में असाधारण काम करना

चाहता है।

बालक जन्म लेने के बाद से अनेक परिस्थितियों का सामना करता है, तथा विकासोन्मुख होता हुआ आगे बढ़ता है। इस प्रक्रिया में वह अनुभव ग्रहण करता है। अनुभव ग्रहण करने से ही उसमें शिक्षा निहित होती है। जान लॉक ने मानवीय जीवन में शिक्षा के महत्व को स्वीकार करते हुए कहा है कि "पौधों का विकास कृषि से होता है और मनुष्य का शिक्षा द्वारा"। बालक की शिक्षा तथा उसका विकास जन्म होने के बाद से ही प्रारम्भ हो जाती है।

घर अथवा परिवार मानव समाज के विकास की आधारभूत इकाई है। एक ऐसा समूह है जिसमें कई व्यक्ति एक साथ रहते हैं। सब एक दूसरे से माता-पिता, भाई-बहिन किसी सम्बन्ध से सम्बन्धित होते है। इनके रहन-सहन, विचार, आचरण, संस्कृति आदि से परिवार बनता है। जो कि गृह पर्यावरण का एक हिस्सा है। जन्म से ही बालक, को एक गृह परिवेश प्राप्त होता है। यही से उसकी शिक्षा की शुरूआत होती है अतः परिवार को बालक की प्रथम पाठशाला कहा जाता है।

गृह वातावरण बालक के सर्वांगीण विकास की आधारशिला है। विद्यालय में प्रवेश के पूर्व बालकों को परिवार की छाया में ही शिक्षा प्राप्त होती है। इस प्रकार परिवार अनियंत्रित अथवा सक्रिय शिक्षा का साधन है, जिसके महत्व को स्वीकार करते हुए पेस्टोलॉजी का कथन है -"कुटुम्ब शिक्षा का सर्वश्रेष्ठ स्थान है एवं बालक का प्रधान विद्यालय है।"

शैक्षिक उपलब्धि

शैक्षिक विकास उसे कहते हैं जो एक विशेष वर्ष में रहकर बालकों को अध्ययन करने हेतु तैयार करता है। उस वर्ष के अंत में बालकों की परीक्षा लेकर यह ज्ञात किया जाता है कि वह पूरे वर्ष के पाठ्यक्रम का कितना ज्ञान प्राप्त कर सके है। जिसके आधार पर उसके परिणाम निर्धारित होते है। शैक्षिक उपलब्धि का वर्तमान में आधार सिर्फ प्राप्तांक तक ही सीमित है।

स्वामी के अनुसार

"शैक्षिक विकास, वह साधन है जिसमें बालकों को ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में दिये गये प्रशिक्षणों के परिणामों को मूल्यांकन किया जाता है।

देश में किशोरावस्था में शिक्षा के उद्देश्यों को सामाजिक और नैतिक विकास के उद्देश्यों से अलग समझा जाता हैं। प्रत्येक विद्यालय में इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अनेक कार्य किये जाते हैं। इन कार्यों में राष्ट्रगान का सम्मान, विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों का सम्मान और अंतराष्ट्रीय महत्व की भाषाओं का ज्ञान मुख्य हैं। विद्यालय इन कार्यों को तब तक पूरा नही कर सकता जब तक इसके

लिए परिवार एवं शिक्षक की सहमति और सहयोग प्रदान नही होता है।

शैक्षिक विकास की दृष्टि से आधुनिक युग की आवश्यकता के अनुसार बच्चों की शिक्षा में परिवार का क्या योगदान हैं? क्या सभी परिवार अपने बच्चों की शिक्षा पर यथोचित सहयोग देने में सफल हैं ? परिवारों की शैक्षणिक योग्यता का प्रभाव किशोरावस्था के छात्रों की शैक्षिक विकास पर पड़ता है? इसी समस्या के समाधान के लिए एक लघुशोध की आवश्यकता महसूस की गई।

प्रयुक्त पदों की क्रियात्मक परिभाषा

- किशोरावस्था किशोरावस्था से तात्पर्य 13 से 19 वर्ष के बालकों से है। किशोरावस्था वह अवस्था है जिसमें विद्यार्थियों में अत्याधिक शिक्षा ग्रहण एवं परिवर्तन का अवसर प्राप्त होता है, जिसमें विद्यार्धियों की रूचियों के अनुसार उन्हें शिक्षा दी जाती है।
- शैक्षिक उपलब्धि विद्यार्थी स्कूल में रहकर जो कुछ भी ज्ञान प्राप्त करता है, उसे उसकी शैक्षिक उपलब्धि कहते हैं। यह उपलब्धि किस सीमा तक प्राप्त हुई इसे जानने के लिये जो परीक्षण किये जाते हैं. उसे शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण कहा जाता है।

अध्ययन का उद्देश्य

- किशोरावस्था के विद्यार्थियों के संवेगात्मक परिपक्वता का उनके शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
- किशोरावस्था के छात्रों के संवेगात्मक परिपक्वता का उनके शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
- किशोरावस्था के छात्राओं के व्यक्तित्व का उनके शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
- शहरी किशोरावस्था के छात्र एवं छात्राओं के संवेगात्मक परिपक्वता का उनके शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
- ग्रामीण किशोरावस्था के छात्र एवं छात्राओं के संवेगात्मक परिपक्वता का उनके शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करन।

अध्ययन का परिसीमन

- शोध समस्या का शीर्षक क्षेत्र 'करौली जिले' के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र को अध्ययन हेतु परिसीमित किया गया है।
- स्तर-कक्षा 9वीं तक के विद्यार्थियों को लिया गया है।
- आयु- 14 वर्ष से 16 वर्ष तक की आयु सीमा तक सीमित किया गया हैं।

शोध विधि

इस शोध पेपर को पूरा करने के लिए शोध में ''सर्वेक्षण विधि'' का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता द्वारा अध्ययन हेतु न्यादर्श के रूप में करौली जिले के कक्षा 9वीं में से 120 अध्ययनरत विद्यार्थियों का चयन किया गया है जिसमें 60 छात्र एवं 60 छात्राएँ है।

चरांक

स्वतंत्र चर - संवेगात्मक परिपक्वता

आश्रित चर - शैक्षिक उपलब्धि

प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत लघुशोध हेतु शोधार्थी द्वारा डॉ. करूणाशंकर मिश्रा द्वाराHEI-MK निर्मित संवेगात्मक परिपक्वता मापनी का प्रयोग किया गया है। शैक्षणिक उपलब्धि मापनी (CAT) के लिए डॉ. पी. के. नायक द्वारा निर्मित प्रश्नावली प्रयोग किया गया है।

प्रयुक्त सांख्यिकी विधि

प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु सांख्यिकीय विधियों मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, प्रमाणिक त्रुटि, टी मूल्य परीक्षण, स्वतंत्र कोटी द्वारा किया गया है।

निष्कर्ष

तालिका 1

क्र.सं	Leqg	N	माध्य मान	SD	Sed	t-test Value	सारणीगत मान (118)	परिणाम
1	संवेगात्मक परिपक्वता	60	72.083	8.34	1.52	4.06	0.05=1.98	अस्वीकृत
2	शैक्षिक उपलब्धि	60	65.91	8.32			0.01=261	

निष्कर्ष

किशोरावस्था के विद्यार्थियों के संवेगात्मक परिपक्वता का उनके शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया गया।

तालिका 2

क्र.सं	Leqg	N	माध्य मान	SD	Sed	t-test Value	सारणीगत मान (118)	परिणाम
1	संवेगात्मक परिपक्वता	30	72.33	8.65	2.23	4291	0.05=200	अस्वीकृत
2	शैक्षिक उपलब्धि	30	65.84	8.7			0.01=266	

निष्कर्ष

किशोरावस्था के छात्रों के संवेगात्मक परिपक्वता का उनके शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया गया।

तालिका 3

क्र.सं	Leqg	N	माध्य मान	SD	Sed	t-test Value	सारणीगत मान (118)	परिणाम
1	संवेगात्मक परिपक्वता	30	72.5	7.98	1.97	3.36	0.05=200	अस्वीकृत
2	शैक्षिक उपलब्धि	30	65.34	7.3			0.01=266	

निष्कर्ष

किशोरावस्था के छात्राओं के संवेगात्मक परिपक्वता का उनके शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया गया।

तालिका 4

क्र.सं	Leqg	N	माध्य मान	SD	Sed	t-test Value	सारणीगत मान (118)	परिणाम
1	संवेगात्मक परिपक्वता	30	74.33	8.35	2.05	2.43	0.05=200	
2	शैक्षिक उपलब्धि	30	69.84	7.6			0.01=266	अस्वीकृत

निष्कर्ष

शहरी किशोरावस्था के छात्र एवं छात्राओं के संवेगात्मक परिपक्वता का उनके शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

तालिका 5

क्र.सं	Leqg	N	माध्य मान	SD	Sed	t-test Value	सारणीगत मान (118)	परिणाम
1	संवेगात्मक परिपक्वता	30	69.00	9.15	2.04	2.86	0.05=200	
2	शैक्षिक उपलब्धि	30	63.16	6.5			0.01=266	अस्वीकृत

निष्कर्ष

ग्रामीण किशोरावस्था के छात्र एवं छात्राओं के गृह परिवेश का उनके शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया गया।

व्यक्तित्व और शैक्षिक उपलब्धि

विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि सबसे अधिक उसके पारिवारिक वातावरण से प्रभावित होती है। अतः अभिभावकों का कर्तव्य है कि वे घर में बालकों के लिये ऐसे वातावरण का निर्माण करें कि बच्चों का सर्वांगीण विकास संभव हो सके। इस लिए शोधकर्ता ने अपने शोध हेतु शैक्षणिक महत्व निम्नलिखित है-

1.इस शोध कार्य से शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों के प्रति शिक्षण उपलब्धि के भ्रम को दूर किया जा सकता है।

2.इस शोध द्वारा छात्र-छात्राओं में पारिवारिक वातावरण की समस्यात्मक भावनाओं को दूर किया जा सकता है।

3.छात्रों में शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण के गलत प्रभाव को दूर किया जा सकता है।

4.छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले पारिवारिक वातावरण की समस्या को दूर किया जा सकता है।

5.छात्रों में शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों के प्रति जागृत होने वाली भ्रांतियों को दूर किया जा सकता है।

सुझाव:

1.छात्रों को पारिवारिक परिवेश एवं शैक्षणिक उपलब्धि में समायोजित करने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

2.अभिभावकों को चाहिए कि वे अपने पारिवारिक वातावरण को व्यवस्थित रखे।

3.विद्यालय में विद्यार्थियों को यह शिक्षा प्रदान करनी चाहिए कि अपने पारिवारिक वातावरण और अपने शैक्षिक विकास में सामंजस्य स्थापित करें।

4.पालकों का यह दायित्व बनता है कि छात्रों के शैक्षिक विकास को प्रभावशाली बनाने के लिए पारिवारिक वातावरण में संतुलन और शान्ति स्थापित करें।

5.विद्यार्थियों को अपने पारिवारिक वातावरण से सामंजस्य स्थापित कर अपने शैक्षिक विकास को प्रोत्साहित करना चाहिए।

निष्कर्ष

किशोर बालक सदा असाधारण काम करना चाहता है। वह दूसरों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करना चाहता है। जब तक वह इस कार्य में सफल होता है, अपने जीवन को सार्थक मानता है। जब इसमें वह असफल हो जाता है तो यह अपने जीवन को नीरस एवं अर्थहीन मानने लगता है। किशोर बालक के डींग मारने की प्रवृत्ति भी अत्यधिक होती है। वह सदा नए नए प्रयोग करना चाहता है। इसके लिए दूर दूर तक घूमने में उसकी बड़ी रुचि रहती है।

बालक की शिक्षा तथा उसका विकास जन्म होने के बाद से ही प्रारम्भ हो जाती है। घर अथवा परिवार मानव समाज के विकास की प्राचीनतम् आधारभूत इकाई का एक ऐसा समूह है जिसमें कई व्यक्ति

एक साथ रहते है। सब एक दूसरे से माता-पिता, भाई-बहिन अथवा किसी सम्बन्ध से सम्बन्धित होते है। इनके रहन-सहन, विचार, आचरण, संस्कृति आदि से परिवार बनता है। गृह पर्यावरण का एक हिस्सा है अतः जन्म से ही प्रत्येक बालक को एक गृह परिवेश प्राप्त होता है, यही से उसकी शिक्षा की शुरूआत होती है।

अतः परिवार को बालक की प्रथम पाठशाला कहा जाता है। गृह वातावरण को बालक के सर्वांगीण विकास की आधारशिला बालक परिवार के व्यवहार, आचार-विचार, नैतिकता, आदि अपने परिवार की मान्यताओं के अनुसार निर्मित एवं विकसित करता है। शिक्षा का उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास करना है, परन्तु इसमें गृह वातावरण की भूमिका मुख्य है। विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि सबसे अधिक उसके पारिवारिक वातावरण से प्रभावित होती है।

किशोर बालक की सामाजिक भावना प्रबल होती है। विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि सबसे अधिक उसके पारिवारिक वातावरण से प्रभावित होती है इसलिए अभिभावकों का कर्तव्य है कि वे घर में बालकों के लिये ऐसे वातावरण का निर्माण करें कि बच्चों का सर्वांगीण विकास हो सके। अभिभावकों को चाहिये कि वह अपनी संतानों चाहे वह लड़का हों या लड़की दोनों को शिक्षा प्रदान करने हेतु समान अवसर उपलब्ध करवायें।

अभिभावक संतानों को सुरक्षित, विश्वस्त, सहयोगी और पारिवारिक वातावरण प्रदान करना चाहिये। जिससे उनमें अपने मित्रों एवं पारिवारिक सदस्यों के साथ समायोजन की भावना पैदा हो सकें। शोधार्थी ने अपने शोध कार्य में ग्रामीण एवं शहरी विद्यालय के विद्यार्थियों में गृह परिवेश में उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पढ़ने वाले सम्बन्ध को समझाने का प्रयास किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1.कपिल, एच. के. 1970 "अनुसंधान विधियां हरि प्रसाद भार्गव, आगरा।

2.शर्मा, आर.ए. 1985 "शिक्षा अनुसंधान" लायल बुक डिपो, मेरठ।

3.सिंह, एम.पी. 1988 "सांख्यिकीय सिद्धान्त एवं व्यवहार एस.चन्द एण्ड कंपनी दिल्ली।

4.अस्थाना, डॉ विनि श्रीवास्तव, विजया एवं अस्थाना, कु. निधि 1998 "शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकीय" अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, पृष्ठ संख्या- 8121

5.पाण्डेय कल्पना एवं एस. एस. श्रीवास्तव "शिक्षा मनोविज्ञान एवं भारतीय एवं पश्चात् दृष्टि।"

6.अस्थाना विपिन, अस्थाना श्वेता "मनोविज्ञान और शिक्षा मापन एवं मूल्याकन विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।

7.शर्मा एच.एम "गृह पर्यावरण और शैक्षणिक संस्थान" प्रिया में साहित्य मंदिर आगरा।

8.डॉ. पाण्डेय आर.पी. विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का अध्ययन, गायत्री पुस्तक मंदिर आगरा-2

9.श्रीवास्तव वी. के लघुशोध प्रबंध 2003 "शासकीय तथा अशासकीय उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालयों की शैक्षिक उपलब्धि व्यवस्था तथा शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन।"

10.जैन रतन चन्द्र लघु शोध प्रबंध (1987-88) प्रशासकीय एवं पूर्णतया स्वचालित, अप्रशायकीय शालाओं के पूर्व माध्यमिक कक्षाओं की शैक्षिक उपलब्धि का विश्लेषणात्मक अध्ययन।"

JPMRJ
JANMAT POWER
MONTHLY RESEARCH JOURNAL